

| | | | | | | | | | |
|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|
| १४ | १५ | २ | ५ | १५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० |
| क | ख | ग | घ | ङ | च | छ | ज | झ | ञ |
| ट | ठ | ड | ढ | ण | त | थ | द | ध | न |
| प | फ | ब | भ | म | य | र | ल | व | श |
| स | ह | ळ | ॠ | ॡ | उ | ऊ | ऋ | ॠ | ॡ |
| इ | लि | लं | लः | लौ | लव | लृ | लृ | लृ | लृ |

2

२

२

चोत्तरे। बंससने दानि दुश्चपापायो व्यापि प्रापन्ना जीर्ण वस्त्रे महा दुष्वी ॥
 जीर्ण वस्त्रे पसे हानि पला ने चित्र विभ्रम ॥ दारु आसने दानि दुःसात ॥ जपन्ता
 नत पोहानि ॥ आसने विभीषण स्थापिते ज्ञान सिद्धि नो धार्मी ब्राह्म चर्मा रीति
 धार्थे कन्व लेखे तव द्वा स ज्ञान व्यापि ज्ञान तं अभिचार त ॥ लीले के नक्त वस्त्र
 वस्त्रो न्तां सर्वा धर्म पत्र वने शान्ति आसने प्रजाग ॥ अथ प्राप्ता प्रजाग ॥ रुद्रा
 दौ पद्माक्षं तं त्रिदेव कुशं नन्द ॥ अथ लंकं च स्फटिकं च सौवर्णिकं मुक्ताहा
 नं तलसि चैव विज्जमाना गन्धर्व ॥ अथ विभे द्वा धीनर्जुन्या शत्रु नास
 नं ॥ अथ व्याधः १ मरुतं स ॥ अथ विभे द्वा धीनर्जुन्या शत्रु नास
 जप कर्म फलं भवेत् ॥ अथ व्याधः १ मरुतं स ॥ अथ विभे द्वा धीनर्जुन्या शत्रु नास
 वटगुरा प्रोक्तं शान्ति ॥ अथ व्याधः १ मरुतं स ॥ अथ विभे द्वा धीनर्जुन्या शत्रु नास
 शान्ति ॥ अथ व्याधः १ मरुतं स ॥ अथ विभे द्वा धीनर्जुन्या शत्रु नास

छेचमयरांधुनं॥श्रावोठेवंधुनं॥चतदभिपःदपाभादपदेना
 सेश्राखिनेरनसंपदा॥कार्तिकेचमह॥मार्गशीर्षेधनंभवेत्॥पौषे
 नविताशापमाद्येसंपत्तिर्भवेत्॥फाल्गु॥संवत्साराणि॥संवत्साराणि॥संवत्साराणि॥संवत्साराणि॥
 नर॥अर्कवर्जित्वा॥भवेत्॥चंद्रवर्गश्चक्षत्रिपाः॥तपवर्गंभवेत्तवैश्य
 तपास्त्रिसुद्रुच्यते॥आतसोक्षत्रिपादधातुकुब्ज्याचिप्रवर्तेतेजत्रिपावैश्य
 दधातुमुत्रहानिभवेत्तः॥वैश्यश्चंद्रवर्गंभवेत्तः॥एवंचत्वारि
 ण्यत्रिपाधि॥दीर्घांशतेविप्रःश्रीश्रीभूतिभूतः॥सदकालेद्वैश्यश्च
 दशकीलिशागते॥पालःकालेचविप्रः॥अथमध्याह्नेभूमिभूतसम्यक्
 संध्याकालेवैश्यचप्रहाराजिकेच॥१॥तपवर्गश्चक्षत्रिपादधातुकुब्ज्याचिप्रवर्तेतेजत्रिपावैश्य
 रानेत्यादि॥अथवाशुभदिनेशतिभूतत्रिपाः॥आतसोक्षत्रिपादधातुकुब्ज्याचिप्रवर्तेतेजत्रिपावैश्य
 नरेवमंतकूपी॥दीर्घांशतेविप्रःश्रीश्रीभूतिभूतः॥सदकालेद्वैश्यश्च

द्विजं

3

3

3

ही ही ब्रह्मस्वरूपिरो नमः यस्य गोपालमंत्रं श्रुत्वा दशाब्दं यं नमो भगवते वासु
 देवाय ॥ अथ निधनवासिक श्री कृष्णमंत्रं ॐ क्लीं कृष्णाय नमः कर्कशसिंहिनराय
 गभ्रमंत्रो दशाब्दं यं हि नरायणगर्भविषयस्वरूपाय नमः सिंहवासि मकुंदमंत्रं
 नमः ॐ यो दशाब्दं यं श्रीवालय मकुंदपुरुषाय स्वाहा ॥ कल्याणसिपीताम्बर
 नमः ॐ नमो प्रेपीताम्बराय नमः ॥ तत्पारासिक जाममंत्रं ॐ क्लो ते न से राता
 ये नमः ॐ ही ही दशाय नमः ॐ नमो तत्त्वतिरंजनताजकरामाय न
 मः अथ व्यासिक नासिकापराय नमः ॐ नमो श्री श्री श्री श्री नारायणाय ॥ 3
 शापस्वाहा ॐ ह्रीं रुक्ताय नमः ॥ नारासि भूमिं नमः ॥ ॐ नमो भगवते
 भजगिधरे स्वाहा भगवत् ॥ निमंत्रनकसासि ॥ ॐ क्लीं भार्गो देवाय स्वा
 हा कुंजरसि मोजालं नमः ॥ ॐ क्लीं कृष्णाय नमः ॥ विदाय गोपीज हवस्व
 तां नमः ॥ ॐ नमो भगवते ॥ ॐ श्री नारासि चक्राय ॥

मल्लकंदशसहस्रं॥ रुद्राक्षं अनातस्यात्तुल्यसि संख्यान्ते विपत्ते॥ पंच
विंशती मे सप्तविंशति कामदात्री शिराया धत्तं प्रोक्तो अथ विंशतितु
ल्यं तिक्तं अथ शतसिद्धि पंचाशी का जप कर्म कल भवेत् अथ तनत्रप
लम अश्विनि मे हि रिरास्वति निशाभा ठहा जेष्ठा अश्लेषा पुष्य शतभिष
स्य दीक्षा स ऊर्जा रा उच्यते अथ विंशति तिष्ठो अते॥ तिष्ठि पुजा दत्तो
प्रापंच मि सप्तमी नवमी तु तिष्ठा द्वात्रिंशो अतो दशी दिव्ये तिष्ठि उच्यते॥
वा नक्षत्रा वृद्ध वृहस्पति सुक दिनो काम उच्यते॥ अथ मंत्र॥ मेव नासि न
गनभीम नारायण मंत्र पदशाब्दे न ॐ श्री स्वाहा हा ह्रीं श्री लक्ष्मी नाराय
णाय नमः॥ ॐ श्री नारायणाय स्वाहा॥ वषट्कारि मंत्र॥ अथ पदशाब्दे
न ॐ नमो विष्णु रूपाय सृजयते महावलाय स्वाहा जायते दान मंत्र
ॐ लोदधि मन्त्रं राग दस्वाहा वृहता न कर्म मंत्रं राग दस्वाहा ॐ श्री

9

ॐ माताम्यमार्गे ब्रह्मसंज्ञे निधौ १ सं ३ ॥

